किले का संक्षिप्त इतिहास

1767 ई. भाई देसू सिंह ने कैथल जागीर के अफगान शासक नियामत खां को पराजित कर सिक्ख राज्य की नीवं रखी। सिक्खों के गुरू श्री हरराय जी ने भाई देसू सिंह के पूर्वज भगतू को भाई की उपाधि प्रदान की । जिस से वह भाई भगतू के नाम से प्रसिद्ध हुए। भाई देसू सिंह ने कैथल पर 1767 से 81 तक, भाई लाल सिंह ने 1781 से 1814 तक, भाई प्रताप सिंह ने 1814 से 1823 तक तथा भाई उदय सिंह ने 1823 से 1843 तक राज्य किया। भाई उद्य सिंह के पास 3500 सैनिक थे। भाई उद्य सिंह ने इस किलें में आलीशान इमारतें बनवाई। विदक्यार तालाब के घाटों की मुरम्मत करवाई तथा उस पर पुल बनवाया। भाई उद्य सिंह साहित्यकारों का सम्मान करते थे। उन्होनें महाकवि भाई संतोख सिंह को कैथल में बुलाकर राजकवि का सम्मान दिया।

14 मार्च 1843 ई. को भाई उदय सिंह की मृत्यु हो गई, भाई उदय सिंह का कोई पुत्र नहीं था इसलिए अंग्रेजों ने कैथल के प्रधान मंत्री और अन्य अधिकारियों को 23 मार्च 1843 को आदेश दिया कि वह रियासत का प्रशासन अंग्रेंजी राज्य को सौंप दें। परंतु भाई उदय सिंह की पत्नी रानी महताब कौर इस के लिए तैयार नहीं थी। परिणामस्वरूप 10 अप्रैल को अंग्रेज सेना ने कैथल की समस्त सीमाओं की नाकेबंदी कर दी। 11 अप्रैल को दोपहर 1 बजे कैथल के लोगों और रियासत की सेना में संयुक्त रूप से एक साथ सातों चौकियों पर आक्रमण कर दिया। कड़े संघर्ष के पश्चात् अंग्रेजी सेना को भागने पर मजबूर होना पड़ा। बहुत से अंग्रेज सैनिक मारे गए। अंग्रेज अधिकारी क्लार्क ने मेजर जनरल क्लार्क को दिल्ली तथा मेरठ से सेना भिजवाने का आग्रह किया। कैथल रियासत से पारिवारिक संबंध होने के बावजूद महाराजा पटियाला ने भी अंग्रेजो की सहायता की। इतना ही नहीं उस ने नाभा व जींद के राजा को भी अंग्रेजों की सहायता करने के लिए कहा। जबकि कैथल, पटियाला, नाभा, जींद के राजा एक ही फुलकिया मिसल से संबंधित थे। 16 अप्रैल 1843 को अंग्रेजों का कैथल के किले व शहर पर अधिकार हो गया तथा अंग्रेजों ने कैथल रियासत को लैप्स की नीति के अंतर्गत कम्पनी के राज्य में शामिल कर लिया। 1843 ई. से 1849 ई. तक कैथल अंग्रेजों के अधीन रहा। 1849 ई. में कैथल को थानेसर जिला के अधीन कर दिया और 1862 ई. में कैथल करनाल जिले का भाग बन गया। 1867 में कैथल नगरपालिका बनी तब कैथल की जनंसख्या 14940 थी।